माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम
हिन्दी	0 0 1	हिन्दी

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे →

उत्तर पुस्तिका का सरल क्रमांक 319-

2138951

अंकों में — परीक्षार्थी का रोल नम्बर

	1	3	2	7	6	8	3	–

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

नीचे दिये गये उदाहरण अनुसार रोल नम्बर भरें।

उदाहरणार्थ	1	1	2	4	3	9	5	6	8
	एक	एक	दो	चार	तीन	नौ	पांच	छः	आठ

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जावे →

क :– पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंकों में ~~०~~ शब्दों में ~~०~~

ख :– परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक 14

ग :– परीक्षा का दिनांक 02 | 03 | 2019

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

हायरसेकण्डरी परीक्षा वर्ष-2019

केन्द्र क्रमांक-131012

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर	केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर
KSM 2/3/19 कौशलेन्द्र	

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे →

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई होलो क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया तथा अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा
	SUNITA TIWARI V.A. शा. उत्कृष्ट करेली V.N.2308

केवल परीक्षक द्वारा भरा जाये।

प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टी करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक (अंकों में)
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		

② [ ] + [ ] = [ ]

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 2 के अंक | कुल

प्रश्न क्र.

प्रश्न- क्रमांक - 1

सही विकल्प :- रिक्त स्थान :- उत्तर :-

(i) रेवती ।

(ii) बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ।

(iii) गानपन ।

(iv) प्रगतिवाद ।

(v) ध्यान न देना ।

प्रश्न- क्रमांक - 2

सही विकल्प :- उत्तर :-

(i) उत्तर :- (स) जयकुमार जलज ।

(ii) उत्तर :- (अ) ~~ऊँट के मुँह में जीरा~~ तेरहवें वर्ष में ।

(iii) उत्तर :- (स) चिरगाँव ।

(iv) उत्तर :- (ब) कमल ।

(v) उत्तर :- (अ) ऊँट के मुँह में जीरा ।

(3) योग पृष्ठ + पृष्ठ अंक = कुल अंक

प्रश्न क्र.

प्रश्न-क्रमांक - 3

सत्य / असत्य :-

(i) उत्तर :- सत्य ।

(ii) उत्तर :- सत्य ।

(iii) उत्तर :- सत्य ।

(iv) उत्तर :- सत्य ।

(v) उत्तर :- असत्य ।

प्रश्न-क्रमांक - 4

सही जोड़ी :-

उत्तर -

क्र०	अ	क्र०	ब
(i)	मंगलवर्षा		भवानीप्रसाद मिश्र
(ii)	अध्यक्ष महोदय		व्यंग्य विधा
(iii)	मेरे जीवन के कुछ चित्र		डॉ० रामकुमार वर्मा
(iv)	लक्ष्यार्थ		मुहावरा
(v)	रस के अंग		चार

4 + =

पूर्व पृष्ठ   पृष्ठ 4 के अंक

प्रश्न क्र.

प्रश्न-क्रमांक-5

एकशब्द या वाक्य में :-

i) उत्तर:- निमाड़ी और बुन्देली।

ii) उत्तर:- यह देह नश्वर है।

iii) उत्तर:- व्यतिरेक अलंकार।

iv) उत्तर:- आचार्य विनोबा भावे।

v) उत्तर:- 50 हजार वें।

BSE

प्रश्न-क्रमांक-6 (अथवा)

उत्तर:- सभी देश हमारे यहाँ शिक्षा प्राप्त करने के प्रयोजन से आते रहे हैं।

प्रश्न-क्रमांक-7

उत्तर- कबीर ने साधु पुरुष की संगति करने को कहा है। क्योंकि पुरुषों की संगति से सन्मार्ग पर चलने लगते हैं।

5

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ क्र. अंक = कुल अंक

प्रश्न क्र. जिससे लोक परलोक सुधरते है।

प्रश्न-क्रमांक - 8

उत्तर:- धरती 'मानव' है तो 'वसंत' मानवता यही नाता दोनों का है।

प्रश्न-क्रमांक - 9

उत्तर:- केवट की जीविका का आधार एकमात्र उसकी नाव थी। वह नाव में सवारियाँ बैठा गंगा पार कराता है।

प्रश्न-क्रमांक -10 (अथवा)

उत्तर: चातक अपनी बोली के द्वारा विरही ह्रदय को दुःख या चोट पहुँचा रहा है। इसलिए कवि ने उसे घातक कहकर सम्बोधित किया है।

प्रश्न-क्रमांक - 11

उत्तर:- गौतम तपस्या करने घर को छोड़कर तथा सन्यासी बनकर वन चले गए थे।

पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 6 के अंक = कुल अंक

प्रश्न क्र.

प्रश्न-क्रमांक - 12

उत्तर:- झाड़ का अभिषेक करने के पूर्व सुर्रो रानी ने उसे एक लात मारकर चकनाचूर कर दिया था।

प्रश्न-क्रमांक - 13 (अथवा)

उत्तर:- गाँव की संध्या में पूजाभाव घंटियों की टनटनाहट तथा शंख घड़ियालों की स्वर लहरी में प्रकट होता है।

प्रश्न-क्रमांक - 14 (अथवा)

उत्तर:- एक समय था जब हमारा देश विश्व गुरु कहलाता था। लेकिन पश्चिमी सभ्यता के अन्धानुकरण ने हमें अपनी सभ्यता को भूलाने पर मजबूर कर दिया था। और हम उसी में ढलते चले गए और अपनी संस्कृति को भूलते गए तो उसी को स्वाम ठाकर लेखक आयातित अंधकार कहा है कि पश्चिमी सभ्यता को अपना और भारतीय सभ्यता को भूलना यही 'आयातित अंधकार' है।

[ ] + [ ] = [ ]

यो . पृष्ठ   पृष्ठ 7 के अंक

प्रश्न क्र.

प्रश्न - क्रमांक - 15 (अथवा)

उत्तर - (1) कलेजा जलना :- (दूसरों की बढ़ती हुई प्रगति से दुःखित होना)

वाक्य में प्रयोग :- मोहन अपने पड़ौसी की बढ़ती हुई प्रगति को देखकर उसका कलेजा जलता है।

अँगूठा दिखाना :- (मना कर देना)

वाक्य में प्रयोग :- रमेश को उसके दोस्त ने पहले विश्वास दिया कि मैं तेरी सहायता करूँगा पर वक्त आने पर उसने अँगूठा दिखा दिया।

प्रश्न - क्रमांक - 16

उत्तर - विभावना अलंकार :- जहाँ कारण के अभाव में कार्य का पूर्ण होना बताया जाए वहाँ विभावना अलंकार होता है।

उदाहरण :- बिनु पद चलै सुनै बिनु काना, कर बिनु करम करै विधि नाना,
आनन रहित सकल रस भोगी, बिनु वाणी वक्ता बड़ जोगी ॥

प्रश्न क्र.

प्रश्न - क्रमांक - 17 (अथवा)

उत्तर :- गौरा के लेखिका के यहाँ आने से लेखिका के घर में मानो दुग्ध महोत्सव हो गया हो। गौरा सुबह तथा शाम का मिलाकर कुल बारह सेर दूध देती थी। और उसके बछड़े लालमणि के लिए कई सेर अधिक दूध छोड़ देने पर भी इतना अधिक बच जाता था कि वहाँ के आस-पास के पशु-पक्षियों से लेकर सभी पालित कुत्ते-बिल्लियों को भी प्रचुर मात्रा दूध उपलब्ध हो गया था। अतः मानो 'दूधो नहाओ' का आशीर्वाद फलित हो गया हो।

B
S
E

प्रश्न - क्रमांक - 18

उत्तर :-

क्र०	भाषा	क्र०	विभाषा
(1)	भाषा में प्रचुर साहित्य पाया जाता है।	(1)	इसमें कम साहित्य पाया जाता है।
	भाषा का क्षेत्र वह व्यापक क्षेत्र में प्रचलित होती है।	(2)	यह राज्य विशेष तक ही सीमित होती है।
(3)	भाषा बोली का पूर्ण विकसित रूप है।	(3)	विभाषा बोली का अर्द्धविकसित रूप है।

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक - 19 (अथवा)

उत्तर - श्रृंगार रस का स्थायी भाव :- रति (प्रेम) ।

उदाहरण :- "राम को रूप निहारति जानकी, कंगन के नग की परछाहीं
याते सबै सुधि भूलि गयी, कर टेकि रही पल टारति नाहीं"

प्रश्न क्रमांक - 20

उत्तर - द्विवेदी युग की चार विशेषताएँ निम्न हैं ।

(1) विषय - वस्तु को व्यवस्थित ढंग से प्रभावी शैली मे प्रस्तुत करने पर बल दिया गया है ।

(2) भाषा को परिमार्जित एवं परिष्कृत किया है ।

(3) राष्ट्रीयता, नैतिकता, समाज सुधार जैसे विषयों पर लिखा गया ।

(4) इस युग हास्य - व्यंग्य शैली को भी अपनाया गया है ।

प्रश्न क्र.

प्रश्न-क्रमांक-21

उत्तर-

प्रगतिवादी कवि :- (1) शिवमंगल सिंह 'सुमन' ।
(2) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ।

रचनाएँ :-
(1) शिवमंगल सिंह 'सुमन' - हिल्लोल, जीवन के गान ।
(2) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' - अनामिका, परिमल, गीतिका ।

विशेषताएँ :- (1) प्रगतिवाद काव्य में रूढ़िवादी विचारधाराओं का जमकर विरोध किया गया है ।

साम्यवाद से प्रभावित ।
ईश्वर के प्रति अनास्था का भाव ।

प्रश्न-क्रमांक-22

उत्तर- शरद जोशी (लेखक परिचय)

(i) दो रचनाएँ :- (1) अंधों का हाथी, जीप पर सवार इल्लियाँ ।
(2) एक था गधा ।

(ii) भाषा-शैली :- शरद जोशी जी की भाषा अत्यन्त सरल व सहज है । भाषा में प्रवाह है और जगह-जगह हास परिहासों का हल्का स्पर्श आपने अपनी रचना को

प्रश्न क्र. और अधिक रोचक बनाया है। आपकी शैली मुख्य रूप से हास्य व्यंग्य प्रधान शैली है, और उसके अन्तर्विरोधों को आधार मानकर अनेक व्यंग्य किए हैं। तथा आप प्रमुख रूप व्यंग्यकार के लेखन शैली है। तथा शैली मे आलोचनात्मक शैली का भी प्रयोग किया है। तथा व्याख्या शैली का भी प्रयोग किया है।

(iii) साहित्य में स्थान :— शरद जोशी जी एक प्रसिद्ध व्यंग्य लेखन के रूप में हिन्दी साहित्य मे अपना विशिष्ट स्थान रखते है। इन व्यंग्यों के कारण आप "व्यंग्यकार" के रूप मे प्रसिद्ध है।

E
S
E

प्रश्न-क्रमांक - 23

उत्तर - "जयशंकर प्रसाद" (कवि परिचय)

(i) दो रचनाएँ :— (1) लहर।
(2) कामायनी।

(ii) भाव-पक्ष :— प्रसाद जी ने भारतीय अतीत के गौरवपूर्ण रूप को अपने साहित्य में उभारा है। उनका साहित्य शक्ति ओज का साहित्य है। उसमें प्रेम और करुणा की स्निग्ध आभा है। उसमें उत्साह और उमंग का आलोक है। तथा प्राकृतिक छवियों में आपका अतुलनीय वर्णन किया गया है। व नए छंदों व प्रतीकों को अपनाया गया है।

(12) [+ =]

पृष्ठ   पृ० 12 क अंक   कुल अंक

प्रश्न क्र.

(ii) कला-पक्ष :- प्रसाद जी की भाषा अत्यन्त सरल, सहज एवं प्रवाह है। अपने काव्यों में उन्होंने अपूर्व शैली का प्रयोग किया है। तथा मनमोहक शैली को भी अपनाया है। उनके भाषा में रस, छंद, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, विरोधाभास तथा संदेह अलंकारों का अपूर्व प्रयोग किया है। तथा आपका प्राकृतिक नवीनो में अतुलनीय स्थान है। तथा मानवीकरण अलंकार की भी छटा अपने काव्यों में प्रदर्शित की है।

(iii) साहित्य में स्थान :- प्रसाद जी का हिन्दी साहित्य में नाटककार के रूप में प्रसिद्ध है। तथा आप छायावादी युग के आधार स्तम्भों में आपका विशिष्ट स्थान है। तथा नाटक के अलावा आप ~~निबंधकार~~ एकांकीकार में भी अपना स्थान रखते हैं। आपकी हिन्दी साहित्य की अनूठी देन युग-युग तक अमर रहेगी।

B
S

प्रश्न-क्रमांक-21 (अथवा)

उत्तर-
संकेत - "यह संसार क्षणभंगुर .... सार्थकता है"

(1) सन्दर्भ :- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्वाति' के 'खेल' नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक आधुनिक युग के प्रेमचन्द प्रसिद्ध कहानीकार "जैनेन्द्र कुमार" है।

13 + [ ] = [ ]

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 13 के अंक | कुल अंक

मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

(2) प्रसंग :- लेखक संसार में किसी वस्तु के नष्ट होने या उसकी क्षणभंगुरता के महत्व का वर्णन कर रहा है।

(3) व्याख्या :- लेखक कहता है कि यह संसार क्षणभंगुर है। नष्ट होने वाला है। इसमें सुख और दुःख की क्या बात है। यह जो जिसने बनाया है। वह उसी में लय हो जाता है। या विलीन अर्थात इसमें मेरा-तेरा की भावना नहीं है। यह तो भगवान की देन है। संसार में समय के साथ सभी चीजें नष्ट होती है। अतः संसार क्षणभंगुर तो ही है। लेखक बालिका के द्वारा भाड़ बनाया गया लेकिन जब उसको एक ही लात में तोड़ देता है। तो बालिका हठ करती है। रोती है, बिलखती है। री मूर्ख तेरा इसमें क्या है। शोक और उद्वेग की क्या बात है। यह तो संसार और मनुष्य रूपी जीवन इसमें पानी के बुदबुदे के समान है। पानी का बुदबुदा एक पल बनकर फिर नष्ट हो जाता है। वह पानी से बनता है। उसी में विलीन हो जाता है अर्थात यह जीवन भी पानी के बुलबुले के ही समान ही है। इसलिए इसकी सार्थकता फूटने में है। तू चिन्ता मत कर मूर्ख बालिका हो गया तो हो जाने दो उसकी सार्थकता इसी में थी

() विशेष :-

(1) भाषा शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली है।
(2) संसार में क्षणभंगुरता के महत्व को बताया गया है।
(3) यह एक प्रसिद्ध कहानी है। भाषा सरल एवं सहज है।
(4) बालिका को समझाने का वर्णन किया जा रहा है।
(5) उद्धरण व व्यास शैली है।

14 ( ] + [ ] =

पृष्ठ 14 के अंक कुल अंक

प्रश्न क्र.

प्रश्न - क्रमांक - 25 (अथवा)

उत्तर - संकेत :- मैया कबहि ... भुई लोटी।

(1) सन्दर्भ :- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्वाति' के 'वात्सल्य और स्नेह' के शीर्षक सूर के बालकृष्ण नामक पाठ से अवतरित है। इसके कवि वात्सल्य रस के सम्राट 'सूरदास जी' है।

(2) प्रसंग :- प्रस्तुत पंक्तियों में बालकृष्ण के मनोहारी ढंग का चित्रण किया गया है।

(3) व्याख्या :- कृष्ण माँ यशोदा से कहते है कि मैया हे मैया मेरी चोटी कब बढ़ेगी। और तू मुझे कितनी बार दूध पिलाती है। फिर भी यह छोटी है। जैसे बलदाऊ जी की चोटी तो लम्बी है। और कितनी लम्बी और मोटी है। तू तो मोह कितना दूध पिलाती है। और माँ यशोदा कृष्ण को मनाने और दूध पिलाने के लिए कहती है कि गाय का दूध पीने से चोटी बढ़ती है और माँ यशोदा उनकी चोटी को संजाती और संवारती है। नहलाती धुलाके, बालो को बनाती है। नागिन की तरह तो स्वष्ट होकर धरती पर लोट जाते है। इसी पंक्ति के माध्यम से सूरदास जी कृष्ण के लोकरंजक का मनोहारी चित्रण किया है।

प्रश्न क्र. (4) काव्यसौन्दर्य :-
(1) ब्रजभाषा का प्रयोग किया है।
(2) तत्सम प्रधान शब्दों का प्रयोग किया गया।
(3) वात्सल्य रस की छटा दर्शनीय है।
(4) कृष्ण का बाल मनोहारी चित्रण किया गया है।
(5) अनुप्रास अलंकार है।

प्रश्न क्रमांक - 26

संकेत- वैदिक काल से .... देती है।

उत्तर-
(i) "हिमालय के सौन्दर्य की महत्ता" शीर्षक

(ii) वैदिक काल से ही हिमालय को बहुत पवित्र पहाड़ माना जाता है।

(iii) हिमालय के पहाड़ों का अति सुन्दर सौन्दर्य देखकर मन आनंद और कृतज्ञ हो जाता है। ऐसा लगता है कि यह सृष्टि ईश्वर की देन है सारी सृष्टि को समभाव जाग्रत होता है।

(iv) यहाँ बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, यमनोत्री जैसे पवित्र तीर्थ है।

(v) कृतज्ञता में प्रत्यय - "ता" वैदिक में - "इक"।

प्रश्न क्र. प्रश्न-क्रमांक - 27 (अथवा)

पत्र

उत्तर -

सेवा में,
नगरपालिका अध्यक्ष महोदय,
लहार नगर भिण्ड मध्यप्रदेश

विषयः- नगरपालिका अध्यक्ष को कॉलोनी की साफ-सफाई की ओर ध्यान देने के लिए निवेदन पत्र।

महोदय,
मैं नवविकसित कॉलोनी लहार की निवासी हूँ। वार्ड क्रमांक-1 से हूँ। अतः मोहल्ले में साफ-सफाई नहीं होती है सड़कों पर नियमित पानी बहता रहता है। नालियों में मच्छर पनप रहे हैं इनकी सफाई नहीं होती है। अतः ये गंदगी अत्यन्त हानिकारक सिद्ध हो रही है। जिससे अनेक बीमारियाँ फैल रही हैं। मलेरिया, हैजा डेंगू जैसी भयंकर बीमारियाँ उत्पन्न हो रही है। जिससे मानव जीवन अस्त-व्यस्त हो गया है संकट में है। और मैंने इससे पहले पर सफाई की ओर ध्यान देते हुए नगरपालिका को सूचना दी थी लेकिन इस कोई कार्यवाही नहीं की है।

अतः आपसे नम्र निवेदन है। आप मोहल्ले की व्याप्त गंदगी को दूर करवाने के लिए नगरपालिका कर्मचारियों को अवगत कराए तो आपकी अति कृपा होगी

धन्यवाद।
दिनांक - 02/03/19

प्रार्थी
नाम - प्रतीक्षा शर्मा एवं
समस्त कॉलोनीवासी

B S E

17 [ ] + [ ] = [ ]

योग पूर्व पृष्ठ   पृष्ठ 17 के अंक   कुल अंक

प्रश्न क्र.

प्रश्नक्रमांक - 28 (म) (निबंध)

उत्तर (iii) नारी है तो कुल है

" नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत पग-पग तल में
पीयूषस्त्रोत सी बहा करो, जीवन के सुन्दर समतल में॥

रूपरेखा:-

(1) प्रस्तावना।
(2) वैदिक काल में नारी।
(3) पुरातन काल में नारी।
(4) भारतीय समाज में नारी का स्थान।
(5) आधुनिक नारी।
(6) मध्ययुगीन नारी।
(7) भक्तिकाल में नारी।
(8) नारी के विकास में ही नारी का गौरव है।
(9) चिन्ता का विषय।
(10) उपसंहार।

" कोटि द्वीप जलते थे मन में, कितने तरु तपते यौवन में,
रस बरसाने वाले आकर, विष छोड़ गए घन में।

प्रस्तावना:- नारी सृष्टि का आधार है नर और नारी सृष्टि की पूर्णता के द्योतक है। नारी के बिना सृष्टि अधूरी है। सृष्टि के आदिकाल से नारी की महत्ता को अक्षुण्ण बताया गया है। समाज की रचना में नारी के अनेक रूप हैं। माँ, प्रेयसी, बहन आदि सभी रूपों में वह मान्य है। वह सम परिस्थितियों में देवी है तो विषम परिस्थितियों में माँ भवानी है। अतः संसार की रचना में नारी को सम्मान की दृष्टि से देखा गया है।

18

पृष्ठ 18 के अंक — कुल अंक

प्रश्न क्र.

मनु स्मृति इसका उदाहरण है।
"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता।"

वैदिक काल में नारी:- वैदिक काल में नारी को पूर्ण स्वतंत्रता के उल्लेख प्राप्त थे। तथा वैदिक काल में नारियों को अधिक सम्मान की दृष्टि से देखा गया। वैदिक काल में नारी की शिक्षा-दीक्षा की उचित व्यवस्था थी। तथा वैदिक काल में नारी ने अनेक ग्रंथों की रचना की उसने वेदों का अध्ययन किया व नवीन मंत्रों का निर्माण कर उनका अध्ययन किया। वैदिक काल में नारी सुसंस्कृत, सभ्य, और सुशिक्षित थी अतः इसी से वैदिक काल में नारी को सम्मान के पद पर सर्वोपरि माना गया है।

B
S
E

भारतीय समाज में नारी का स्थान:- भारतीय समाज में नारी का स्थान महत्वपूर्ण है नर अगर आजीविका प्राप्त करके परिश्रम करता है तो परिवार के अस्तित्व को बनाए रखने में नारी ही पूर्ण भूमिका निभाती है। नारी के अनेक रूप हैं वह हर रूप सुख देने वाली है। इसलिए किसी धार्मिक कार्य में नारी को ही प्राथमिकता दी जाती है। नारी दुर्गा बनकर शक्ति का भण्डार है, सरस्वती बनकर, विद्या देने वाली है। लक्ष्मी बनकर सुख समृद्धि देने वाली है। माँ बनकर पुत्र के हर कष्ट को सहती है। पत्नी बनकर पति को आत्म विश्वास देती है। बहन बनकर भाई को रक्षा का सूत्र बाँधती है। इस प्रकार भारतीय समाज में नारी को सम्मान को अधिक सम्माननीय कहा गया है।

प्रश्न क्र.

पुरातन काल में नारी :- वैदिक काल में नारी को सम्मान की दृष्टि से देखा गया था लेकिन पुरातन काल में भी नारी ने अपनी भूमिका बनाई है। वह कंधे से कंधे मिलाकर कार्य करती है। इस युग की नारियों ने ऋग्वेद के ग्रन्थों की रचना की तथा इस युग महान शकुन्तला, कुन्ती, गांधारी, रोमषा, लोपमुद्रा आदि नारियाँ हुई तथा उन्होंने अपने शौर्य युद्ध भूमि में भी दिखाया रानी लक्ष्मीबाई तथा दुर्गावती इसके ज्वलन्त उदाहरण है।

आधुनिक युग में नारी :- आधुनिक युग में नारी को अधिक सम्मान की दृष्टि से देखा गया आधुनिक में आते-आते नारी की आजाद हो गई। आधुनिक युग में नारी को राजा राममोहनराय तथा दयानन्द सरस्वती ने नारी की महत्ता को अक्षुण्ण बताया है तथा उन्हें सम्मान दिया है।

B
S
E

भक्तिकाल में नारी :- भक्ति काल में नारी की स्थिति इतनी दयनीय बन गई उसकी संवेदना के बारे में उसके लिए किसी दो शब्द तक नहीं कहे, सूर, तुलसी इन सब कवियों ने नागिन कहा है तथा उसे ढोल, गँवार शूद्र पशु नारी के समान ताड़ना का अधिकारी बताया है।

" ढोल गँवार शूद्र पशु नारी, यह सब है ताड़न अधिकारी

प्रश्न क्र.

नारी के विकास में नारी का गौरव :- नारी के विकास में ही नारी का गौरव सन्निहित है।
पं. जवाहर लाल नेहरू, शास्त्री, भगत सिंह जैसी महान विभूतियों को जन्म नारी ने ही दिया तथा नारी की ही कोख से विभूतियाँ पैदा हुई तथा नारी ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

चिन्ता का विषय :- आज का युग नारी के लिए चिन्ता का विषय बन गया है। नारी को विलासिता भोगनी पड़ रही है, वह असभ्य, निरक्षर है, इसलिए सभी आवश्यकताओं के लिए वह पुरुष पर आश्रित होती चली जायेगी। समाज में नारी के लिए बेटी के जन्म की अपेक्षा बेटे के जन्म को अधिक महत्व दिया जा रहा है।

उपसंहार - नारी का भारतीय समाज में महत्वपूर्ण स्थान है। वह सभी रूपों में पूज्यनीय है, तथा वैदिक काल की तरह इसे लेकिन सभी कालों में तो नहीं लेकिन आधुनिक संस्कृति में भारतीय समाज में नारी के स्थान महत्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। यहाँ उसके रूप माँ, प्रेयसी, बहन आदि पत्नी अनेक उसके सभी रूप पूज्यनीय हैं, वह रचना की दृष्टि से सृष्टि का आधार है। नारी सृष्टि से मानव विकास की संरचना की राह का मार्ग खुलता जा रहा है।

"मुक्त करो नारी को मानव, चिर बन्दिनी नारी को,
युग-युग की निर्मम कारा से, जननी सखी प्यारी को।"

कुल अंक

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

प्रश्न-क्रमांक - 28 (ब)

(iii) जल संरक्षण

रूपरेखा - 'जल ही जीवन है इसे बर्बाद न करें' ।

(1) प्रस्तावना
(2) जल की उपयोगिता
(3) जल संरक्षण की आवश्यकता
(4) जल प्राप्ति के स्रोत
(5) जल संरक्षण करने के साधन
(6) जल संकट
(7) जल संकट से हानि
(8) उपसंहार